अव्यक्त पालना का रिटर्न

निमित्त टीचर्स बहनो का टाइटल

निमित्त टीचर्स बहनों को बाबा ने मास्टर विश्व की शिक्षक का टाइटल दिया है क्योकि विश्व–महाराजन की प्रालब्ध पाने की निशानियाँ अभी से ही दिखाई देंगी।

1 बाबा पूछते है कि स्वयं को विश्व की शिक्षक समझती हो अथवा अपने–अपने सेवाकेन्द्रों की मैं फलाने स्थान की टीचर हूँ ? यह बुद्धि में रहता है।

2 बुद्धि में रहना चाहिए कि मैं विश्व की निमित्त बनी हुई मास्टर विश्व–शिक्षक हूँ! हद की याद नही बेहद की याद रहे, केवल अपने स्थान के नही, बुद्धि में बेहद का नशा और बेहद की सेवा के प्लैन चलते रहे।

3 बेहद का नशा रहेगा तब विश्व की मालिक बनेंगी। अगर हद का नशा और हद की स्मृति रहती है, तो विश्व के मालिकपन के संस्कार नहीं बनेंगे, फिर तो छोटा–छोटा राजा बनेंगे।

25.10.75

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न : टीचर्स को बेहद की सेवा का चांस क्यों लेना चाहिए ?

उत्तर : टीचर्स को बेहद की सेवा का चांस इसलिए लेना चाहिए क्योंकि:-

1. टीचर्स स्वतन्त्र हैं, कोई कर्म-बन्धन नहीं सिर्फ सेवा का बन्धन है। वह बन्धन, बन्धन नहीं, लेकिन बन्धन-मुक्त करने वाला है।

2. जब सब बातों में स्वतन्त्र हो, तो टीचर्स की बेहद की बुद्धि होनी चाहिए। जितना स्वयं बेहद की सेवा का अनुभव करेंगे उतना ही जास्ती अनुभवीमूर्त्त कहलायेंगी।

3. जहाँ तक हो सके वहाँ तक बेहद की सेवा में सहयोग देने का चांस स्वयं लेना चाहिए। प्रोग्राम प्रमाण करना उसमें आधा हिस्सा अपना होता, आधा दूसरे का हो जाता है। जो स्वयं चांस लेते वह फुल ही मिलता है।

25.10.75

मन की बात... बापदादा के साथ

मैं आत्मा :-

मीठे बाबा, लगाव की मुख्य निशानी क्या है ? इसे किस प्रकार कम किया जा सकता है ?

बापदादा :- मीठे बच्चे,

लगाव की मुख्य निशानी यह है कि बुद्धि बार-बार बाप से हट कर उस तरफ जाये तो समझो लगाव है।

इसे कम करने के लिए मुख्य बातो का ध्यान रखना है:-

- अपने आप से भी लगाव न हो।
- जो अपने में विशेषता है, कोई में हैंडलिंग पॉवर अच्छी है वा कोई में वाणी की पॉवर है तो कहेंगी मैं ऐसी हूँ। परन्तु यह तो बापदादा की देन है।
- बुद्धि में रखो कि - "यह बाप से मिला हुआ वर्सा है। जो सर्व-आत्माओं के प्रति हमें मिला है, वो(परमात्मा) दे रहे हैं, हम तो निमित्त हैं।"

25.10.75

25-10-75 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं बेहद की शिक्षिका हूँ।

बेहद की शिक्षिका अर्थात् अनुभवी-मूर्त्त। हर विशेषता को बाप से मिला हुआ वर्सा समझने वाली।

25-10-75

बेहद की शिक्षिवा समझ वैराग्य वृत्ति को धारण करो

- टीचर्स स्वतन्त्र
- कोई कर्म बन्धन नहीं
- अनुभवी - मूर्त

मैं विश्व की निमित्त बनी हुई मास्टर विश्व शिक्षक हूँ!

मास्टर विश्व की शिक्षक

1. बुद्धि मे रहना चाहिए कि मैं विश्व की निमित्त बनी हुई मास्टर विश्व-शिक्षक हूँ। हद की याद नहीं बेहद की याद रहे, केवल अपने स्थान के नहीं, बुद्धि में बेहद का नशा और बेहद की सेवा के प्लैन चलते रहे।

2. बुदधि में रखो कि - "यह बाप से मिला हुआ वर्सा है। जो सर्व आत्माओं के प्रति हमें मिला है, वो (परमात्मा) दे रहे हैं, हम तो निमित्त है।"